बूढ़ी काकी

प्रेमचंद

बुढ़ापा बहुधा बचपन का पुनरागमन हुआ करता है । बूढ़ी काकी में जिह्वा स्वाद के बिना और कोई चेष्टा शेष न थी और न अपने कष्टों की ओर आकर्षित करने का, रोने के अतिरिक्त कोई दूसरा सहारा ही । समस्त इंद्रियाँ- नेत्र, हाथ और पैर- जवाब दे चुके थे । पृथ्वी पर पड़ी रहतीं और घरवाले कोई बात उनकी इच्छा के प्रतिकूल करते, भोजन का समय टल जाता या उसका परिणाम पूर्ण न होता अथवा बाजार से कोई वस्तु आती और उन्हें न मिलती तो वे रोने लगती थीं । उनका रोना-सिसकना साधारण रोना न था, वे गला फाड़-फाड़कर रोती थीं ।

उनके पतिदेव को स्वर्ग सिधारे कालांतर हो चुका था । बेटे तरुण हो-होकर चल बसे थे । बस एक भतीजे के सिवाय और कोई न था । उसी भतीजे के नाम उन्होंने अपनी सारी संपत्ति लिख दी । भतीजे ने संपत्ति लिखाते समय खूब लम्बे-चौड़े वायदे किए, किन्तु वे सब वादे केवल सब्जबाग थे । यद्यपि उस संपत्ति की वार्षिक आय डेढ़-दो सौ रुपए से कम न थी तथापि बूढ़ी काकी को पेट भर भोजन भी कठिनाई से मिलता था । इसमें उनके भतीजे पंड़ित बुद्धिराम का अपराध था अथवा उनकी अर्धांगिनी श्रीमती रूपा का, इसका निर्णय करना सहज नहीं । बुद्धिराम स्वभाव के सज्जन थे, किन्तु उसी समय तक, जब तक कि उनके कोष पर कोई आँच न आए । रूपा स्वभाव से तीव्र थी सही, पर ईश्वर से डरती थी । अतएव बूढ़ी काकी को उसकी तीव्रता इतनी न खलती थी जितनी बुद्धिराम की भलमनसाहत ।

बुद्धिराम को कभी-कभी अपने अत्याचार का खेद होता था । विचारते कि इसी संपति के कारण मैं इस समय भलामानुष बना बैठा हूँ । यदि मौखिक आश्वासन और सूखी सहानुभूति से स्थिति में सुधार हो सकता तो उन्हें कदाचित् कोई आपत्ति न होती, परंतु विशेष व्यय का भय उनकी सच्चेष्टा को दबाए रखता था । यहाँ तक कि यदि द्वार पर कोई भला आदमी बैठा होता और बूढ़ी काकी उस समय अपना राग अलापने लगतीं तो वे आग हो जाते और घर में आकर उन्हें जोर से डाँटते । लड़कों को बुड्ढों से स्वाभाविक विद्वेष होता ही है और फिर जब माता-पिता का यह रंग देखते तो वे बूढ़ी काकी को और भी सताया करते । कोई चुटकी काटकर भागता, कोई उन पर पानी की कुल्ली कर देता । काकी चीख मारकर रोतीं, पर यह बात प्रसिद्ध थी कि वे केवल खाने के लिए रोती हैं, अतएव उनके संताप और आर्तनाद पर कोई ध्यान नहीं देता था । हाँ, काकी क्रोधातुर होकर बच्चों को गालियाँ देने लगतीं तो रूपा घटना-स्थल पर जा पहुँचती । इससे काकी अपनी जिह्वा-कृपाण का कदाचित् ही प्रयोग करती थी, यद्यपि उपद्रव-शान्ति का यह उपाय रोने से कहीं अधिक उपयुक्त था ।

संपूर्ण परिवार में यदि काकी को किसी से अनुराग था तो वह बुद्धिराम की छोटी लड़की लाड़ली थी । लाड़ली अपने दोनों भाइयों के भय से अपने हिस्से का मिठाई-चबैना बूढ़ी काकी के पास बैठ कर खाया करती थी । यह उनका रक्षागार था और यद्यपि काकी की शरण उनकी लोलुपता के कारण बहुत महँगी पड़ती थी तथापि भाइयों के अन्याय से कहीं सुलभ थी । इसी स्वार्थानुकूलता ने उन दोनों में सहानुभूति का आरोपण कर दिया था ।

रात का समय था । बुद्धिराम के द्वार पर शहनाई बज रही थी और गाँव के बच्चों का झुंड विस्मयपूर्ण नेत्रों से गाने का रसास्वादन कर रहा था । चारपाइयों पर विश्राम करते हुए मेहमान नाइयों से मुक्कियाँ लगवा रहे थे । समीप ही खड़ा हुआ भाट बिरदावली सुना रहा था । दो-एक अँग्रेजी पढ़े हुए नवयुवक इन व्यवहारों से उदासीन थे । वे इस गँवार मंडली में बोलना अथवा सम्मिलित होना अपनी प्रतिष्ठा के प्रतिकूल समझते थे ।

आज बुद्धिराम के बड़े लड़के का तिलक आया है । यह उसी का उत्सव है । घर के भीतर स्त्रियाँ गा रही थीं और रूपा मेहमानों के लिए भोजन के प्रबन्ध में व्यस्त थी । भट्ठियों पर कड़ाह चढ़ रहे थे । एक में पूड़ी-कचौड़ी निकल रही थी । दूसरे में अन्य पकवान बनते थे । एक बड़े हंडे में मसालेदार तरकारी पक रही थी । घी और मसाले की क्षुधावर्धक सुगंध चारों ओर फैली हुई थी ।

बूढ़ी काकी अपनी कोठरी में शोकमय विचार की भाँति बैठी हुई थी । यह स्वादमिश्रित सुगंधि उन्हें बेचैन कर रही थी । वे मन-ही-मन विचार कर रही थीं, संभवत: मुझे पूड़ियाँ न मिलेंगी । इतनी देर हो गई, कोई भोजन लेकर नहीं आया । मालूम होता है, सब लोग भोजन कर चुके हैं । मेरे लिए कुछ न बचा । यह सोचकर उन्हें रोना आया परंतु अपशकुन के भय से वे रो न सकीं ।

'अहा ! कैसी सुगंधि है ! अब मुझे कौन पूछता है ! जब रोटियों के ही लाले पड़े हैं तब ऐसे भाग्य कहाँ कि भरपेट पूड़ियाँ मिलें ।' यह विचार कर उन्हें रोना आया, कलेजे में हूक-सी उठने लगी । परंतु रूपा के भय से उन्होंने फिर मौन धारण कर लिया ।

बूढ़ी काकी देर तक इन्हीं दुखदायक विचारों में डूबी रहीं । घी और मसालों की सुगंधि रह-रहकर आपे से बाहर किये देती थी । मुँह में पानी भर-भर आता था । पूड़ियों का स्वाद स्मरण करके हृदय में गुदगुदी होने लगती थी । किसे पुकारूँ, आज लाड़ली बेटी भी नहीं आई । दोनों छोकरे सदा दिखाई दिया करते हैं । आज उनका भी कहीं पता नहीं । कुछ मालूम तो होता कि क्या बन रहा है ।

बूढ़ी काकी की कल्पना में पूड़ियों की तस्वीर नाचने लगी । खूब लाल-लाल, फूली-फूली, नरम-नरम होंगी । रूपा ने भली-भाँति मोयन दिया होगा । कचौड़ियों में अजवायन और इलायची की महक आ रही होगी । एक पूड़ी मिलती तो जरा हाथ में लेकर देखती । क्यों न कड़ाह के सामने ही बैठूँ । पूड़ियाँ छन-छनकर तैयार होंगी । कड़ाह से गरम-गरम निकालकर थाल में रखी जाती होंगी । फूल हम घर में भी सूँघ सकते हैं, परन्तु वाटिका में कुछ और ही बात होती है । इस प्रकार निर्णय कर बूढ़ी काकी उकड़ूँ बैठकर हाथों के बल सरकती हुई बड़ी कठिनाई से चौखट से उतरीं और धीरे-धीरे रेंगती हुई कड़ाह के पास आ बैठीं । यहाँ आने पर उन्हें उतना ही धैर्य हुआ जितना भूखे कुत्ते को खानेवाले के सम्मुख बैठने में होता है ।

रूपा उस समय कार्यभार से उद्विग्न हो रही थी । कभी इस कोठे में जाती, कभी उस कोठे में, कभी कड़ाह के पास जाती, कभी भंडार में जाती । किसी ने बाहर से आकर कहा- 'महाराज ठंडाई माँग रहे हैं ।' ठंडाई देने लगी । इतने में फिर किसी ने आकर कहा - 'भाट आया है, उसे कुछ दे दो ।' भाट के लिए सीधा निकाल रही थी कि एक तीसरे आदमी ने आकर पूछा - 'अभी भोजन तैयार होने में कितना विलंब है ? जरा ढोल-मंजीरा उतार दो ।' बेचारी अकेली स्त्री दौड़ते-दौड़ते व्याकुल हो रही थी, झुँझलाती थी, कुढ़ती थी, परंतु क्रोध प्रकट करने का अवसर न पाती थी । भय होता, कहीं पड़ोसिनें यह न कहने लगें कि इतने में उबल पड़ी । प्यास से कंठ

सूख रहा था । गर्मी के मारे फुँकी जाती थी, परन्तु इतना अवकाश भी नहीं था कि जरा पानी पी ले अथवा पंखा लेकर झले । यह भी खटका था कि जरा आँख हटी और चीजों की लूट मची । इस अवस्था में उसने बूढ़ी काकी को कड़ाह के पास बैठी देखा तो जल गई । क्रोध न रुक सका । इसका भी ध्यान न रहा कि पड़ोसिनें बैठी हुई हैं; मन में क्या कहेंगी; पुरुष सुनेंगे तो क्या कहेंगे ? जिस प्रकार मेढ़क केंचुए पर झपटता है, उसी प्रकार वह बूढ़ी काकी पर झपटी और उन्हें दोनों हाथों से झटककर बोली- ऐसे पेट में आग लगे । पेट है या भाड़ ? कोठरी में बैठते हुए क्या दम घुटता था ? अभी मेहमानों ने नहीं खाया, भगवान को भोग नहीं लगा । तब तक धैर्य न हो सका ? आकर छाती पर सवार हो गईं । जल जाए ऐसी जीभ । दिन भर खाती न होतीं तो न जाने किसकी हाँड़ी में मुँह न डालतीं ? गाँव देखेगा तो कहेगा बुढ़िया भरपेट खाने को नहीं पातीं, तभी तो इस तरह मुँह बाये फिरती हैं । नाम बेचने पर लगी हैं । नाक कटवा कर ही दम लेंगी । इतना ठूँसती हैं, न जाने कहाँ भस्म हो जाता है ? भला चाहती हो तो जाकर कोठरी में बैठो, जब घर के लोग खाने लगेंगे तब तुमको भी मिलेगा । तुम कोई देवी नहीं हो कि चाहे किसी के मुँह में पानी न जाए, परन्तु तुम्हारी पूजा पहले ही हो जाए ।

बूढ़ी काकी ने सिर न उठाया, न रोईं, न बोलीं, चुपचाप रेंगती हुई अपनी कोठरी में चली गईं । आघात ऐसा कठोर था कि हृदय और मस्तिष्क की सारी शक्तियाँ, सम्पूर्ण विचार और सम्पूर्ण भार उसी ओर आकर्षित हो गये थे । नदी में जब कगार का कोई वृहत खंड कटकर गिरता है तो आसपास का जल-समूह चारों ओर से उसी स्थान को पूरा करने के लिए दौड़ता है ।

भोजन तैयार हो गया । आँगन में पत्तलें पड़ गईं, मेहमान खाने लगे । स्त्रियों ने जेवनार-गीत गाना आरंभ कर दिया । मेहमानों के नाई और सेवकगण भी उसी मंडली के साथ, किन्तु कुछ हटकर भोजन करने बैठे थे, परन्तु सभ्यतानुसार जब तक सब-के-सब खा न चुके, कोई उठ नहीं सकता था । दो-एक मेहमान जो कुछ पढ़े-लिखे थे, सेवकों के दीर्घाहार पर झुँझला रहे थे । वे इस बंधन को व्यर्थ और बे-सिर-पैर की बात समझते थे ।

बूढ़ी काकी अपनी कोठरी में जाकर पश्चात्ताप कर रही थीं कि मैं कहाँ-से-कहाँ गईं । उन्हें रूपा पर क्रोध नहीं था । अपनी जल्दबाजी पर दुख था । सच ही तो, जब तक मेहमान लोग भोजन न कर चुकेंगे, घरवाले कैसे खायेंगे ? मुझसे इतनी देर भी न रहा गया । सबके सामने पानी उतर गया । अब जब तक कोई बुलाने न आयेगा, न जाऊँगी ।

मन-ही-मन इसी प्रकार का विचार कर वे बुलावे की प्रतीक्षा करने लगीं । परन्तु घी की रुचिकर सुवास बड़ी ही धैर्य-परीक्षक प्रतीत हो रही थी । उन्हें एक-एक पल एक-एक युग के समान मालूम होता था ! अब पत्तलें बिछ गई होंगी । अब मेहमान आ गए होंगे । लोग हाथ-पैर धो रहे हैं, नाई पानी दे रहा है । मालूम होता है लोग खाने बैठ गये । जेवनार गाया जा रहा है, यह विचार कर वे मन को बहलाने के लिए लेट गयीं । धीरे-धीरे एक गीत गुनगुनाने लगीं उन्हें मालूम हुआ कि मुझे गाते देर हो गयी । क्या इतनी देर तक लोग भोजन कर ही रहे होंगे । किसी की आवाज सुनाई नहीं देती । अवश्य ही लोग खा-पीकर चले गये । मुझे कोई बुलाने नहीं आया । रूपा चिढ़ गई है, क्या जाने न बुलाए । सोचती हो कि आप ही आएगी । वे कोई मेहमान तो नहीं जो उन्हें बुलाऊँ । बूढ़ी काकी चलने के लिए तैयार हुईं । यह विश्वास कि एक मिनट में पूड़ियाँ और मसालेदार

तरकारियाँ सामने आएँगी, उनकी स्वादेन्द्रिय को गुदगुदाने लगी । उन्होंने मन में तरह- तरह के मनसूबे बाँधे- पहले तरकारी से पूड़ियाँ खाऊँगी । फिर दही और शक्कर से, कचौड़ियाँ रायते के साथ मजेदार मालूम होंगी । चाहे कोई बुरा माने चाहे भला, मैं तो माँग-माँग कर खाऊँगी । यही न लोग कहेंगे कि इन्हें विचार नहीं ? कहा करें, इतने दिन के बाद पूड़ियाँ मिल रही हैं तो मुँह जूठा करके थोड़े ही उठ जाऊँगी ।

वे उकड़ूँ बैठकर हाथों के बल सरकती हुई आँगन में आईं । परन्तु हाय दुर्भाग्य ! अभिलाषा ने अपने पुराने स्वभाव के अनुसार समय की मिथ्या कल्पना की थी । मेहमान-मंडली अभी बैठी हुई थी । कोई खाकर उँगलियाँ चाटता था, कोई तिरछे नेत्रों से देखता था कि और लोग अभी खा रहे हैं या नहीं । कोई इस चिन्ता में था कि पत्तल पर पूड़ियाँ छूटी जाती हैं, किसी तरह इन्हें भीतर रख लेता । कोई दही खाकर जीभ चटकारता था, परन्तु दूसरा दोना माँगते संकोच करता था कि इतने में बूढ़ी काकी रेंगती हुई उनके बीच में जा पहुँची । कई आदमी चौंककर उठ खड़े हुए । पुकारने लगे- अरे यह बुढ़िया कौन है ? यह कहाँ से आ गई ? देखो किसी को छू न दे ।

पं. बुद्धिराम काकी को देखते ही क्रोध से तिलमिला गये । पूड़ियों का थाल लिए खड़े थे । थाल को जमीन पर पटक दिया और जिस प्रकार निर्दय महाजन अपने किसी बेईमान और भगोड़े कर्जदार को देखते ही झपटकर उसका टेंटुआ पकड़ लेता है, उसी तरह लपककर उन्होंने बूढ़ी काकी के दोनों हाथ पकड़े और घसीटते हुए लाकर उन्हें अँधेरी कोठरी में धम से पटक दिया । आशारूपी वाटिका लू के एक ही झोंके में विनष्ट हो गई ।

मेहमानों ने भोजन किया । घरवालों ने भोजन किया । बाजेवाले भी भोजन कर चुके, परन्तु बुढ़ी काकी को किसी ने नहीं पूछा, बुद्धिराम और रूपा दोनों ही काकी को उनकी निर्लज्जता के लिए दंड देने का निश्चय कर चुके थे । उनके बुढ़ापे पर, दीनता पर किसी को करुणा न आती थी । अकेली लाड़ली उनके लिए कुढ़ रही थी ।

लाड़ली को काकी से अत्यन्त प्रेम था । बेचारी भोली लड़की थी । बाल-विनोद और चंचलता की उसमें गंध तक न थी । दोनों बार जब उसके माता-पिता ने काकी को निर्दयता से घसीटा तो लाड़ली का हृदय ऐंठ कर रह गया । वह झुँझला रही थी कि ये लोग काकी को क्यों बहुत- सी पूड़ियाँ नहीं देते ? क्या मेहमान सब-की-सब खा जाएँगे ? और यदि काकी ने मेहमानों के पहले खा लिया तो क्या बिगड़ जाएगा ? वह काकी के पास जाकर उन्हें धैर्य देना चाहती थी किन्तु माता के भय से न जाती थी । उसने अपने हिस्से की पूड़ियाँ बिल्कुल न खाई थीं । अपनी गुड़ियों की पिटारी में बंद कर रखी थीं । वह उन पूड़ियों को काकी के पास ले जाना चाहती थी । उसका हृदय अधीर हो रहा था । बूढ़ी काकी मेरी बात सुनते ही उठ बैठेंगी । पूड़ियाँ देखकर कैसी प्रसन्न होंगी ! मुझे खूब प्यार करेंगी ।

रात के ग्यारह बज गये थे । रूपा आँगन में पड़ी सो रही थी । लाड़ली की आँखों में नींद न आती थी । काकी को पूड़ियाँ खिलाने की खुशी उसे सोने न देती थी । उसने गुड़ियों की पिटारी सामने ही रखी थी । जब विश्वास हो गया कि अम्मा सो रही हैं तो वह चुपके से उठी और विचारने लगी, कैसे चलूँ ? चारों ओर अँधेरा था । केवल चूल्हों में आग चमक रही थी और चूल्हों के पास एक कुत्ता लेटा था । लाड़ली की दृष्टि द्वार के

सामनेवाले नीम की ओर गई । उसे मालूम हुआ कि उस पर हनुमान जी बैठे हुए हैं । उनकी पूँछ, उनकी गदा, सब स्पष्ट दिखलाई दे रहा है । मारे भय के उसने आँखें बंद कर लीं । इतने में कुत्ता उठ बैठा । लाड़ली को ढाढ़स हुआ । कई सोये हुए मनुष्यों के बदले एक भागता हुआ कुत्ता उसके लिए अधिक धैर्य का कारण हुआ । उसने पिटारी उठायी और बूढ़ी काकी की कोठरी की ओर चली ।

बूढ़ी काकी को केवल इतना स्मरण था कि किसी ने मेरा हाथ पकड़कर घसीटा । फिर ऐसा मालूम हुआ जैसे कोई पहाड़ पर उड़ाए लिए जाता है । उनके पैर बार-बार पत्थरों से टकराये तब किसी ने उन्हें पहाड़ पर से पटका; वे मूर्च्छित हो गयीं ।

जब वे सचेत हुईं तो किसी की जरा भी आहट न मिलती थी । समझीं कि सब लोग खा-पीकर सो गये और उनके साथ मेरी तकदीर भी सो गयी । रात कैसे कटेगी ? राम ! क्या खाऊँ ? पेट में अग्नि धधक रही है ? हा ! किसी ने मेरी सुधि न ली ! क्या मेरा पेट काटने से धन जुड़ जाएगा ? इन लोगों को इतनी भी दया नहीं आती कि न जाने बुढ़िया कब मर जाए ? उसका जी क्यों दुखाएँ ? मैं पेट की रोटियाँ ही खाती हूँ कि और कुछ ? इस पर यह हाल । मैं अंधी अपाहिज ठहरी, न कुछ सुनूँ न बूझूँ । यदि आँगन में चली गयी थी तो क्या बुद्धिराम से इतना कहते नहीं बनता था कि काकी, अभी लोग खा रहे हैं, फिर आना । मुझे घसीटा, पटका । उन्हीं पूड़ियों के लिए रूपा ने सबके सामने गालियाँ दीं । उन्हीं पूड़ियों के लिए इतनी दुर्गति करने पर भी उनका पत्थर का कलेजा न पसीजा । सबको खिलाया, मेरी बात तक न पूछी । जब तब ही न दीं, तो अब क्या देंगे ?

यह विचारकर काकी निराशामय संतोष के साथ लेट गयीं । ग्लानि से गला भर-भर आता था, परंतु मेहमानों के भय से रोती न थीं ।

सहसा उसके कानों में आवाज आई - 'काकी उठो, मैं पूड़ियाँ लाई हूँ ।' काकी ने लाड़ली की बोली पहचानी । चटपट उठ बैठीं । दोनों हाथों से लाड़ली को टटोला और उसे गोद में बैठा लिया ।

लाड़ली ने पूड़ियाँ निकाल कर दीं । काकी ने पूछा -''क्या तुम्हारी अम्मा ने दी हैं ?''

लाड़ली ने कहा -''नहीं, यह मेरे हिस्से की हैं ।''

काकी पूड़ियों पर टूट पड़ीं । पाँच मिनट में ही पिटारी खाली हो गई । लाड़ली ने पूछा - ''काकी पेट भर गया ?''

जैसे थोड़ी-सी वर्षा ठंडक के स्थान पर गर्मी पैदा कर देती है, उसी भाँति इन थोड़ी सी पूड़ियों ने काकी की क्षुधा और इच्छा को और उत्तेजित कर दिया था । बोलीं -''नहीं बेटी, जाकर अम्मा से और माँग लाओ ।''

लाड़ली ने कहा -''अम्मा सोती है, जगाऊँगी तो मारेंगी ।''

काकी ने पिटारी को फिर टटोला । उसमें कुछ खुर्चन गिरे थे । उन्हें निकालकर वे खा गयीं । बार-बार ओंठ चाटती थीं । चटकारे भरती थीं ।

हृदय मसोस रहा था कि और पूड़ियाँ कैसे पाऊँ । संतोष-सेतु जब टूट जाता है तो इच्छा का बहाव अपरिमित हो जाता है । काकी का अधीर मन इच्छा के प्रबल प्रवाह में बह गया । उचित और अनुचित का

विचार जाता रहा । वे कुछ देर तक उस इच्छा को रोकती रहीं । सहसा लाड़ली से बोलीं - मेरा हाथ पकड़कर वहाँ ले चलो जहाँ मेहमानों ने बैठकर भोजन किया है ।

लाड़ली उनका अभिप्राय समझ न सकी । उसने काकी का हाथ पकड़ा और ले जाकर जूठी पत्तलों के पास बैठा दिया । दीन, क्षुधातुर, हतज्ञान बुढ़िया पत्तलों से पूड़ियों के टुकड़े चुन-चुनकर भक्षण करने लगी । ओह, दही कितना स्वादिष्ट था, कचौड़ियाँ कितनी सलोनी, खस्ता कितने सुकोमल । काकी बुद्धिहीन होते हुए भी यह जानती थीं कि मैं वह काम कर रही हूँ जो मुझे कदापि न करना चाहिए । मैं दूसरों की जूठी पत्तल चाट रही हूँ । परंतु बुढ़ापा तृष्णा रोग का अंतिम समय है, जब सम्पूर्ण इच्छाएँ एक ही केन्द्र पर आ लगती हैं । बूढ़ी काकी में यह केन्द्र उनकी स्वादेन्द्रिय थी ।

ठीक उसी समय रूपा की आँखें खुलीं । उसे मालूम हुआ कि लाड़ली मेरे पास नहीं है । वह चौंकी, चारपाई के इधर-उधर ताकने लगी कि कहीं नीचे तो नहीं गिर पड़ी । उसे वहाँ न पाकर बैठी तो क्या देखती है कि लाड़ली जूठी पत्तलों के पास चुपचाप खड़ी है और बूढ़ी काकी पत्तलों पर से पूड़ियों के टुकड़े उठा-उठाकर खा रही हैं । रूपा का हृदय सन्न हो गया । किसी गाय की गर्दन पर छुरी चलते देखकर जो अवस्था उसकी होती, वही उस समय उसकी हुई । इससे अधिक शोकमय दृश्य असम्भव था । पूड़ियों के कुछ ग्रासों के लिए उसकी चचेरी सास ऐसा निकृष्ट कर्म कर रही है । यह वह दृश्य था जिसे देखनेवालों के हृदय काँप उठते हैं । ऐसा प्रतीत हुआ मानो जमीन रुक गई है, आसमान चक्कर खा रहा है । संसार पर कोई नयी विपत्ति आने वाली है । रूपा को क्रोध न आया । शोक के सम्मुख क्रोध कहाँ ? करुणा और भय से उसकी आँखें भर आईं । इस अधर्म के पाप का भागी कौन है ? उसने सच्चे हृदय से गगनमंडल की ओर हाथ उठाकर कहा - 'परमात्मा, मेरे बच्चों पर दया करो । इस अधर्म का दंड मुझे मत दो, नहीं तो मेरा सत्यानाश हो जाएगा ।'

रूपा को अपनी स्वार्थपरता और अन्याय इस प्रकार प्रत्यक्ष रूप में कभी न दिख पड़े थे । वह सोचने लगी- ''हाय ! मैं कितनी निर्दयी हूँ । जिसकी सम्पत्ति से मुझे दो सौ रुपया वार्षिक आय हो रही है, उसकी यह दुर्गति ! और मेरे कारण ! हे दयामय भगवान ! मुझसे बड़ी भारी चूक हुई है, मुझे क्षमा करो । आज मेरे बेटे का तिलक था । सैकड़ों मनुष्यों ने भोजन किया । मैं उनके इशारों की दासी बनी रही । अपने नाम के लिए सैकड़ों रुपये व्यय कर दिए परन्तु जिस की बदौलत हजारों रुपए खाये, उसे इस उत्सव में भरपेट भोजन न दे सकी । केवल इसी कारण तो, कि वह वृद्धा असहाय है ।

रूपा ने दीया जलाया, अपने भंडार का द्वार खोला और एक थाली में सम्पूर्ण सामग्रियाँ सजाकर लिए हुए बूढ़ी काकी की ओर चली ।

आधी रात जा चुकी थी, आकाश पर तारों के थाल सजे हुए थे और उन पर देवगण स्वर्गीय पदार्थ सजा रहे थे, परन्तु उनमें से किसी को वह परमानंद प्राप्त न हो सकता था जो बूढ़ी काकी को अपने सम्मुख थाल देखकर प्राप्त हुआ । रूपा ने कंठावरुद्ध स्वर में कहा - 'काकी उठो, भोजन कर लो । मुझसे आज बड़ी भूल हुई, उसका बुरा न मानना । परमात्मा से प्रार्थना करो कि वे मेरा अपराध क्षमा कर दें ।'

भोले-भाले बच्चों की भाँति, जो मिठाइयाँ पाकर मार और तिरस्कार सब भूल जाते हैं, बूढ़ी काकी वैसे ही सब भुलाकर बैठी हुई खाना खा रही थीं । उनके एक-एक रोएँ से सच्ची सदिच्छाएँ निकल रही थीं और रूपा इस स्वर्गीय दृश्य का आनंद लेने में निमग्न थी ।

विचारबोध :- *प्रेमचंद हिन्दी साहित्य में बेजोड़ साहित्यकार हैं । हिन्दी भाषा को लोकप्रिय बनाने में उनका विशेष योगदान है । वे कहानी साहित्य के कल्पतरु तथा उपन्यास साहित्य के सम्राट माने जाते हैं ।*

व्यक्ति की मानसिकता बुढ़ापे में परिवर्तित हो जाती है । उनमें बच्चों की सी लालसा जाग जाती है । किन्तु परिवार के दूसरे सदस्य अक्सर उन्हें अनादर करते हैं । उनकी स्वार्थी प्रवृति के कारण 'बूढ़ी काकी' जैसी अपाहिज अंधी बुढ़िया अकथनीय कष्ट झेलकर भी उनके प्रति सदिच्छाएँ प्रकट करती हैं ।

- शब्दार्थ -

बहुधा - अक्सर । सुलभ - आसानी से प्राप्त होने वाला । प्रतिकूल - विपरीत । कालान्तर - बहुत समय । तरुण - युवा । मिश्रित - मिली-जुली । विद्वेष - जलन । अनुराग - प्रेम । लोलुपता - लालचीपन । वाटिका - बगीचा । निर्णय - निश्चय । सम्मुख - सामने । उद्विग्न - परेशान । दीर्घाहार - अधिक भोजन । स्वादेन्द्रियाँ - स्वाद की इन्द्रियाँ, जीभ आदि । मिथ्या - झूठ । हतज्ञान - अज्ञान, नासमझ । करुणा - दया । मूर्च्छित - बेहोश । सचेत - होश आना । दुर्गति - बुरी दशा । ग्लानि - दु:ख । अपरिमित - सीमाहीन, असीमित । मदांध - मद से अंधा, नशे में अंधा । सेतु - पुल । क्षुधातुर - भूख से व्याकुल । बुद्धिहीन - मूर्ख । तृष्णा - इच्छा । पतित - गिरा हुआ । प्रतीत होना - मालूम होना । भागी - हिस्सेदार । पुनरागमन - दुबारा आना । चेष्टा - इच्छा, चाह, प्रयास । कोष - खजाना । कृपाण - तलवार । रक्षागार - सुरक्षित स्थल । जिह्वा-जीभ । स्वार्थानुकूलता - स्वार्थों के अनुकूल । विस्मयपूर्ण - आश्चर्य से भरा । क्षुधावर्द्धक - भूख बढ़ाने वाली । शोक - दु:ख । भलमनसाहत - सज्जनता । सुगन्धि - महक, सुवास । स्मरण - याद करना । दिक् करना - परेशान करना । विलम्ब - देर । कंठ - गला । अवकाश - छुट्टी । वृहद् - बड़ा । पश्चात्ताप करना-पछताना । मंसूबे बाँधना - योजना बनाना । अभिलाषा - इच्छा । दण्ड - सजा । वार्षिक आय - सालाना कमाई । दासी - नौकरानी । असहाय - बेसहारा । कंठावरुद्ध - भरे गले से । अपराध - गलती । तिरस्कार -

अपमान । निमग्न होना - डूबना, तल्लीन । प्रबल - तेज़ । अभिप्राय - मतलब । भक्षण करना - खा लेना । अधीर - बेचैन, व्याकुल । ग्रासों - टुकड़ों । निकृष्ट - नीच, तुच्छ । आपत्ति - मुसीबत । संताप - पीड़ा । आर्तनाद - दु:खभरी आवाज । बिरदावली - गुणगान । भाट - चारण, जो राजाओं का गुणगान करते हैं । निर्दयता - कठोरता ।

प्रश्न और अभ्यास

1. दीर्घ उत्तरमूलक प्रश्न -

(i) बुद्धिराम के घर में मनाये जा रहे उत्सव का वर्णन कीजिए ।

(ii) घरवाले काकी का अनादर क्यों और कैसे करते हैं ?

(iii) ''बुढ़ापा एक बिमारी है'' - विषय पर एक निबंध लिखिए ।

2. संक्षिप्त उत्तरमूलक प्रश्न -

(i) बुद्धिराम का परिचय दीजिए ?

(ii) काकी और लाड़ली किन कारणों से एक-दूसरे को चाहती थीं ?

(iii) मेहमानों के पास काकी को देखकर बुद्धिराम क्यों तिलमिला जाता है ?

(iv) लाड़ली रात को काकी के पास क्यों जाती है ?

(v) जूठी पत्तलें चाटती हुई काकी को देखकर रूपा क्या सोचती है ?

(vi) पूड़ियों की सुगंध से काकी को रोना क्यों आ रहा था ?

3. अति संक्षिप्त उत्तरमूलक प्रश्न -

(i) बूढ़ी काकी कौन थी ?

(ii) काकी कब रोने लगती थी ?

(iii) लड़के काकी को किस प्रकार सताते थे ?

(iv) पूरे परिवार में काकी सबसे अधिक प्रेम किससे करती थी ?

(v) घर में उत्सव क्यों मनाया जा रहा था ?

(vi) काकी की संपत्ति से बुद्धिराम को कितनी आय प्राप्त होती थी ?

(vii) लाड़ली काकी के लिए पूड़ियाँ कहाँ छुपाकर रखती है ?

4. सप्रसंग व्याख्या कीजिए -

(i) बुढ़ापा तृष्णा रोग का अंतिम समय है, जब संपूर्ण इच्छाएँ एक ही केन्द्र पर आ लगती हैं ।

(ii) आवाज ऐसी कठोर थी कि हृदय और मस्तिष्क की सम्पूर्ण शक्तियाँ, संपूर्ण विचार, और संपूर्ण भार उसी ओर आकर्षित हो गए ।

(iii) जैसे थोड़ी-सी वर्षा ठंडक के स्थान पर गर्मी पैदा कर देती है उसी भाँति, इन थोड़ी सी पूड़ियों ने काकी की क्षुधा और इच्छा को और भी उत्तेजित कर दिया था ।

भाषा ज्ञान

5. नीचे लिखे शब्दों से खालीस्थान भरिए -

(मंसूबे, प्रेम, पश्चात्ताप, मंडली, चौंककर)

(i) मेहमान .... अभी बैठी हुई थी ।

(ii) लाड़ली को काकी से अत्यन्त .... था ।

(iii) कई आदमी .... उठ खड़े हुए ।

(iv) बूढ़ी काकी अपनी कोठरी में जाकर .... करने लगी ।

(v) उन्होंने मन में तरह-तरह के .... बाँधे ।

6. विलोम शब्द लिखिए -

सुगंध, वृहद्, भय, सुलभ, प्रतिकूल, शोक, दंड, तिरस्कार

7. पर्यायवाची शब्द लिखिए -

सुगंध, जमीन, प्रेम, ग्लानि, कोष

8. निम्नलिखित शब्दों के लिंग परिवर्तन कीजिए -

स्त्री, काकी, बूढ़ी, कुत्ता, पति, भतीजा, भाई, श्रीमती, लाड़ली

9. निम्नलिखित वाक्यों में क्रिया विशेषण को रेखाकिंत कीजिए -

(i) बुद्धिराम को कभी-कभी अपने अत्याचार का खेद होता था ।

(ii) पूड़ियाँ छन-छनकर तैयार होंगी ।

(iii) किसी ने बाहर से आकर कहा ।

(iv) यह विचारकर काकी निराशामय संतोष के साथ लेट गई ।

(v) समीप ही खड़ा हुआ भाट बिरदावली सुना रहा था ।

10. निम्नलिखित शब्दों को वाक्य में प्रयोग कीजिए -

कालांतर, अनुराग, कार्यभार, अभिप्राय, अभिलाषा, अपरिमित

अभ्यास :

क्या आप जानते हैं ''जिस क्रियाविशेषण से काल अर्थात् समय का बोध हो उसे कालवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं । जैसे - आजकल, पहले, अब, जब, तब,कब, कभी-कभी ।

उदाहरण - जब रोटियों के ही लाले पड़े हैं तब ऐसे भाग्य कहाँ कि भरपेट पूड़ियाँ मिलें ।

प्रस्तुत पाठ से पाँच ऐसे वाक्य छाँटिए जिसमें कालवाचक क्रियाविशेषण हो ।

•